ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 6 | June 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.65

भारतीय सामाजिक परिवर्तन में सावित्रीबाई फुले के अथक प्रयासों का विश्लेषण

प्रो. दीप्ति जौहरी

शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।

Email: deeptijohri9bcb@gmail.com

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी के भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक पुर्नजागरण की भूमि तैयार करने में जिन सुधारकों का नाम आता है, उनमें फुले दम्पत्ति का उल्लेख समीचीन हो जाता है, क्योंकि उस सदी में भारत में जिन सुधारों की आवश्यकता थी, उसको इस दम्पत्ति ने संवेदना के धरातल पर अपने सक्रियतावाद से सम्भव बनाया। उनके सक्रियतावाद में ज्ञान की वैचारिकी के साथ ही जमीनी स्तर पर कार्य करना था, जिसको आगे लेकर चलने में सावित्रीबाई फुले का अक्षुण्ण योगदान था। उन्होंने स्त्री जीवन की कठिनाईयों में प्रत्येक पहलू को अपनी प्रखरता एवं असाध्य श्रम से सुधारने की कोशिश की, जिसमें स्त्रियों को शिक्षित करने से लेकर विधवा–विवाह, दलित स्त्रियों को आश्रय देना, शिशु आश्रय गृह एवं स्त्री केशमुंडन जैसी परम्पराओं का विरोध करना सम्मिलित था। वह अपने समय की प्रथम स्त्रीवादी, प्रथम शिक्षिका एवं समाज सुधारिका थीं, जिन्हें इतिहास के पन्नों पर समुचित स्थान प्राप्त न हो सका। प्रस्तुत लेख उनके द्वारा किये गये भागीरथ प्रयासों के बारे में एक विमर्श की शुरुआत भर है।

कुंजी शब्दः *सावित्रीबाई फुले, स्त्री शिक्षा, दलित चेतना, सामाजिक न्याय*

अवधारणात्मक पृष्ठभूमिः

फूको कहते हैं, ''ज्ञान एक विशेष प्रकार की ताकत है, ताकत एक विशेष तरह का ज्ञान है, दोनों के बीच द्वैत नहीं है, ज्ञान–शक्ति दोनों मिलकर अपने समय की एकीकृत संरचना को रचते हैं। फूको के अनुसार शक्ति का स्वरूप सबसे ज्यादा हमारे विचार–विमर्श के ढांचों में प्रकट होता है, विमर्श ही वह चीज है, जिसमें वह हर चीज छिपी हुई है, जो ताकत और ज्ञान से अपना सम्बन्ध बनाती है।''

सम्भवतः विमर्श के पन्नों में इसीलिये साबित्रीबाई फुले से सम्बन्धित ज्ञान की परतों को खोलने की आवश्यकता महसूस होती है, क्योंकि उनकी उपस्थिति एक शताब्दी गुजरने के बाद भी समकालिकता का पर्याय बनी हुई है। वे न केवल अपने समय का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि वर्तमान में भी नायिका की तरह आदर्श प्रस्तुत कर समाज को मार्गदर्शन देने का कार्य करती हैं। भारतीय स्त्रियों के लिये सदैव से ही रोल मॉडल तथा ऐसी नायिकायें जो सकारात्मक प्रेरणास्रोत बन सकें, को इतिहास में समुचित स्थान प्राप्त न हो पाना भारतीय समाज के लिये दुर्भाग्यपूर्ण ही है। भारतीय इतिहास लेखन मोटे तौर पर विभिन्न युद्धों तथा नायकों के महिमामण्डन का ही इतिहास रहा है, इसमें प्रायः स्त्री चरित्रों

तथा उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्वों को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया। इन्हीं स्थितियों के फलस्वरूप, भारतीय समाज में शिक्षा ग्रहण कर रहीं छात्राओं के पास सदैव से ही ऐसे प्रेरक स्त्री जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने तथा अनुसरण करने के लिये नायिकाओं की कमी रही है। यदि सम्पूर्ण भारतीय इतिहास पर दृष्टि डाली जाये तो हम पायेंगे कि अक्सर ही इतिहास के पन्नों में स्त्रियों के योगदान या तो खो कर रह गये या फिर वे सिर्फ आंशिक स्थान पा सके, जिसके फलस्वरूप स्त्रियों के ऐसे योगदान जिनसे पूरे के पूरे मानव समाज को संजीवनी भी मिली, इतिहास के पन्नों में समुचित स्थान प्राप्त न कर सके। इन स्थितियों में व्यापक स्तर पर बदलाव लाने के उद्देश्य से कई बार कई बार क्षेत्र विशेष द्वारा व स्थानीय स्तर पर कुछ व्यक्तिगत, तो कुछ संगठित प्रयास किये भी जाते हैं, परन्तु व्यापक रूप से पर्याप्त संदर्भ का अभाव ही बना रहता है। इस क्रम में महाराष्ट्र में कई स्त्री चरित्र प्रमुखता से उभरे जोकि राष्ट्रीय–अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में कामयाब रहे, परन्तु कहीं न कहीं भाषा तथा अन्य वैभिन्नय और मतैक्य न होने के कारण भारतवर्ष के अन्य स्थानों पर चर्चित न हो सके। इस सन्दर्भ में यदि महाराष्ट्र की ही बात की जाये तो विभिन्न प्रमुख समाज सेविकाओं–नायिकाओं का नाम स्वयं पटल पर आ जाता है, जैसे–सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे, रमाबाई, रखयाबाई एवं फातिमा बीबी इत्यादि।

अध्ययन का उद्देश्य:

वर्तमान लेख के माध्यम से संक्षिप्त रूप में सावित्रीबाई फुले के आरम्भिक जीवन और रूढ़िबद्ध भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हेतु उनके द्वारा किये गये अथक प्रयासों और संघर्षों का विश्लेषण कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी वैचारिकी के महत्व को समझने का प्रयास किया गया है।

सावित्रीबाई फुले का आरंभिक जीवन:

सावित्रीबाई फुले का जन्म 03 जनवरी, 1831 को पुणे–सतारा मार्ग पर स्थित नयागांव में उस दौर में हुआ, जब भारतीय परिदृश्य में स्त्रियों–बालिकाओं की शिक्षा कोई विमर्श का विषय ही नहीं हुआ करती थी। सन् 1840 में मात्र 10 वर्ष की आयु में उनका विवाह 13 वर्ष के ज्योतिबाराव फुले से हो गया। विवाह के उपरान्त ज्योतिबाराव ने ही साबित्रीबाई को घर से पढ़ाना–लिखाना शुरु किया। 01 मई, 1851 से 30 अप्रैल, 1852 की अवधि की एजुकेशन रिपोर्ट के अनुसार, ***"ज्योतिबाराव ने अपनी पत्नी को घर पर शिक्षित किया तथा उन्हें अध्यापिका बनाने के लिये प्रशिक्षित भी किया।"*** सावित्रीबाई फुले ने सुश्री फरार के अहमदनगर स्थित संस्थान और सुश्री मिशेल के पुणे स्थित नार्मल स्कूल से शिक्षक–प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सावित्रीबाई फुले द्वारा घर की देहरी लांघकर पठन–पाठन शुरु करना एक प्रकार से आधुनिक भारतीय महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश की शुरुआत थी।

भारतीय सामाजिक परिवर्तन और सावित्रीबाई के क्रांतिकारी प्रयास:

भारत के सामाजिक और शैक्षणिक इतिहास में महात्मा ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई एक असाधारण दम्पत्ति के रूप में सामने आते हैं। वे पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता और न्याय की स्थापना के लिये आंदोलन खड़ा करने के संघर्ष में पूरी ताकत के साथ जुटे रहे। उन्हें देश में लड़कियों के लिये पहला स्कूल और भारतीयों द्वारा संचालित पहला पुस्तकालय स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने डेढ़ सदी पहले ही 1854–55 में ही साक्षरता मिशन की शुरुआत कर दी थी। इसके अतिरिक्त शोषित, गर्भवती, ब्राह्मण विधवाओं और उनके बच्चों की देखभाल हेतु 1863 में अपने घर में शिशु हत्या निवारण गृह की स्थापना की। **सत्यशोधक समाज** का गठन कर **सत्यशोधक विवाह** की परम्परा शुरु की। जातिप्रथा के विरोध हेतु अपने घर के कुएं को अछूतों के लिये खोल दिया। बाल विवाह की खिलाफत के साथ ही उन्होंने विधवाओं के पुर्नविवाह भी करवाये। इस प्रकार से फुले दम्पत्ति ने

महिलाओं, शूद्रों और अतिशूद्रों का एक सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक आंदोलन निर्मित किया, जो अपने आप में क्रांतिकारी और व्यापक स्तर पर प्रभावकारी था। ज्योतिबाराव तथा सावित्री बाई पर मराठी में 200 तथा अन्य भाषाओं में लगभग 40 से अधिक किताबें प्रकाशित हैं, परन्तु सावित्रीबाई फुले के व्यक्तित्व तथा उनके योगदान को रेखांकित करती हुई एक समालोचनात्मक जीवनी का अभाव प्रतीत होता है।

सावित्रीबाई फुले के अवदानों पर दृष्टिपात करने पर अनुभव होता है कि उन्होंने मुख्य रूप से जिन क्षेत्रों में अपना योगदान दिया, वे सामाजिक सुधार, शैक्षणिक कार्य तथा लेखन कार्य हैं। उनके सार्वजनिक जीवन और निजी जीवन में कोई द्वैत नहीं था। एक शैक्षणिक सुधारक होने के साथ ही वे शिक्षाशास्त्री, स्त्रीवादी, कवयित्री, पत्नी, मॉ तथा राजनेता थीं। सभी के समन्वित रूप ने ही उनके राजनैतिक जीवन तथा व्यक्तित्व को आकार दिया। वर्तमान परिदृश्य में किसी स्त्री के लिये इस प्रकार के व्यक्तित्व को पाना इतना दुरूह नहीं है, परन्तु उस समय के समाज में सावित्रीबाई के लिये इस प्रकार की उपलब्धियों को प्राप्त कर पाना बेहद संघर्षपूर्ण था, जिस समय पूरा का पूरा भारतीय समाज आज की अपेक्षा संसाधन–सम्पन्न नहीं था। 19वीं सदी के पुणे और ग्रामीण महाराष्ट्र जहां सावित्रीबाई फुले रहती थीं, वहीं की परिस्थितियां काफी प्रतिकूल थीं। ये दम्पत्ति पुणे में दलित श्रमजीवियों की एक बस्ती में रहते थे। ज्योतिबाराव फुले सावता माली नामक जाति में पैदा हुये थे, इस कारण उन्हें स्वयं की शिक्षा में भी छुआछूत, भेदभाव तथा अपमान का सामना करना पड़ा। एक दकियानूसी ब्राह्मण के कहने पर उनकी पढ़ाई बंद करवा दी गई थी, लेकिन मुंशी गफ्फार बेग और सर लिजिट ने उनकी मेधा को पहचानकर पिता गोविंदराव से शिक्षा जारी करने को कहा, इस बात को ज्योतिबाराव कभी नहीं भूले तथा इसीलिये उन्होंने सन् 1848 में जो पहला स्कूल खोला, वह दलित तथा मुस्लिम परिवारों की बच्चियों के लिये था। उनको यकीन था कि मॉगों तथा महारों को शिक्षित करने से देश का सबसे ज्यादा भला होगा और इसीलिये वे इस काम में जुट गये। इस दम्पत्ति ने इस नेक उद्देश्य के लिये काम करने के लिये एक मंडली का गठन किया, ये संस्थायें थीं– नेटिव फीमेल स्कूल, पुणे और सोसायटी फॉर प्रमोटिंग द एजुकेशन ऑफ महार्स एंड मांग्स। इन दोनों संस्थाओं के जरिये उन्होंने पुणे और उसके आसपास के इलाकों में स्कूलों का जाल बिछा दिया। मुंबई के अभिलेखागार में दिनांक 05 फरवरी, 1852 का वह आवेदन–पत्र उपलब्ध है, जिसमें ज्योतिबाराव ने अपनी शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन हेतु सरकार से आर्थिक मदद प्रदान करने के लिये अनुरोध किया था। इसके अनुसार लड़कियों के लिये पहले तीन स्कूल 03 जुलाई 1851 को चिपलूनकर बाड़ा, 17 नवम्बर, 1851 को रास्ता पैठ और 15 मार्च 1852 को बेताल पैठ में शुरु किये गये इन स्कूलों में 04, 03 और 01 शिक्षक और 48, 51 और 33 लड़कियां थीं। सावित्रीबाई फुले इनमें से पहले स्कूल की प्रधानाध्यापिका थीं और उनके साथ विष्णुपंत मोरेश्वर और बिट्ठल भास्कर बच्चियों को पढ़ाते थे। सावित्रीबाई फुले ने तय किया था कि वह अपना जीवन स्त्री शिक्षा के सुधार हेतु समर्पित कर देंगी और बिना किसी वेतन या पारिश्रमिक के उन्होंने यह कार्य किया। उस वक्त ड्रॉप आउट्स अर्थात् बीच में स्कूल छोड़ने वालों की संख्या आज की तुलना में कहीं अधिक थी, इसके लिये उन्होंने दलित बहुजनों के लिये साक्षरता अभियान भी चलाया।

सामाजिक बदलावों हेतु सावित्रीबाई फुले का संघर्ष:

समाज के कटु विरोध तथा उनके साथ अपमानजनक व्यवहार के बाबजूद भी सावित्रीबाई फुले अपना काम करती रहीं। उन्हें रास्ते में आते–जाते अपमानित किया जाता था तथ गोबर–पत्थर इत्यादि फेंककर हतोत्साहित करने के प्रयास किये जाते थे, लेकिन वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये प्रतिबद्ध थीं। सखाराम कोल्हे के संस्मरण के अनुसार उन्हें परेशान करने वालों के लिये सावित्रीबाई फुले के पास एक जबाव रहता था– ***"मैं अपनी साथी बहनों को पढ़ाने का पवित्र काम कर रही हूं। ऐसे में तुम जो पत्थर या गोबर मुझ पर फेंकते हो, वह मुझे फूल जैसा लगता है।***

भगवान तुम्हारा भला करे।'' बलवंत सखाराम कोल्हे के इन संस्मरणों से पता चलता है कि सावित्रीबाई फुले कितनी साहसी थीं। 1863 में सावित्रीबाई ने पहल करके **''शिशु हत्या निवारण गृह''** केवल ब्राह्मण विधवाओं के लिये खोला था। उन्होंने शोषित विधवाओं के लिये अपने घर 395, गंज पेठ पुणे में आश्रय गृह शुरु किया। सन् 1884 तक अलग–अलग स्थानों से 35 ब्राह्मण विधवायें वहां आ चुकी थीं। सावित्रीबाई फुले उनके प्रसव में मदद करतीं और उनके शिशुओं की देखभाल भी करतीं थीं। इसी क्रम में ब्राह्मण विधवाओं के केश मुंडन की प्रथा को भी बंद कराने की पहल भी की। सन् 1877 में महाराष्ट्र में भीषण सूखा पड़ा, जिसके लिये डा. शिवप्पा जैसे मित्रों की मदद से धनकाबाड़ी में **''विक्टोरिया बालाश्रम''** शुरु किया, जहां रोज एक हजार गरीबों और जरूरतमंदों को खाना खिलाया जाता था। अपने घर में सावित्रीबाई दूर से आने जाने वाले छात्रों के लिये हॉस्टल भी चलाती रहीं।

महिलाओं का उत्थान और बेहतरी सावित्रीबाई के अत्यंत महत्वपूर्ण सरोकारों में शामिल थे। सावित्रीबाई दूरदर्शी तथा स्पष्ट सोच की थीं तथा नव–शिक्षित महिलाओं के बीच उनका बड़ा सम्मान भी था। उनसे पुणे की कई सुशिक्षित महिलायें जैसे पंडिता रमाबाई, आनंदीबाई जोशी एवं रमाबाई रानाडे आदि मिलने आती थीं।

ज्योतिबाराव की मृत्यु के बाद सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज का नेतृत्व संभाला तथा जीवन के अंत तक इस संस्था का नेतृत्व करती रहीं। सन् 1853 में सासवड़ में आयोजित सत्यशोधक समाज के सम्मेलन की अध्यक्षता भी की। इसके अतिरिक्त सन् 1896 में राज्य में पड़े सूखे के दौरान लोगों की मदद के लिये उन्होंने बहुत काम किया। सन् 1897 में प्लेग की बीमारी में उन्होंने लोगों की मदद करना जारी रखा तथा इसी के दौरान महार बस्ती के लोगों की मदद करने के दौरान उन्हें प्लेग ने जकड़ लिया तथा 10 मार्च 1897 को रात नौ बजे उनकी मृत्यु हो गई। सन् 1848 से लेकर 1897 तक अर्थात् करीब 50 साल सावित्रीबाई निरंतर बिना रुके, बिना थके समाज के लोगों के लिये काम करती रहीं। उन्होंने सेवा तथा करुणा का असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया।

सावित्रीबाई का कृतित्वः

सावित्रीबाई ने जो मूल्यवान लेखन किया, वह निम्नांकित पुस्तकों में संग्रहीत है–

1. काव्यफुले–कविता संग्रह, 1854
2. जोतीराव्स स्पीचेस, सावित्रीबाई द्वारा संपादित, 25 दिसम्बर, 1856
3. सावित्रीबाई लैटर्स टू ज्योतिराव
4. स्पीचेस ऑफ मातुश्री सावित्रीबाई, 1852
5. बावनकुशी सुबोध रत्नाकर, 1892

काव्यफुले सावित्रीबाई की कविताओं का प्रथम संग्रह था, जिसका प्रकाशन सन् 1854 में हुआ था। इसमें कुल 41 कवितायें हैं, जो प्रकृति, सामाजिक मुद्दों और इतिहास पर केन्द्रित हैं।

जोतीराव्स स्पीचेस सावित्रीबाई द्वारा संपादित पुस्तक है, जिसमें ज्योतिबाराव के चार भाषण का लिप्यांतरण चार्ल्स जोशी ने किया है।

सावित्रीबाई लैटर्स टु जोतीराव में ओटूर और नायगांव से लिखे कुल तीन पत्र शामिल हैं।

स्पीचेस ऑफ मातुश्री सावित्रीबाई में विविध विषयों पर सावित्रीबाई के भाषण संग्रहीत हैं।

बावनकाशी सुबोध रत्नाकर भारत के इतिहास और ज्योतिबाराव के कार्यों के बारे में कविताओं का संग्रह है। इसमें कुल 52 कवितायें हैं।

निष्कर्ष:

सावित्रीबाई ने जीवनपर्यंत ज्योतिबाराव को जिस तरह से संबल, सहयोग तथा साथ दिया वह असाधारण और अतुलनीय था। पुरुषों और महिलाओं की समानता व दोनों के शांतिपूर्ण साहचर्य का जो आदर्श फुले दम्पत्ति ने प्रस्तुत किया, वह कालातीत है। अतीत में उन्होंने शिक्षा, सामाजिक न्याय, जाति उन्मूलन तथा उच्चवर्गीय प्रभुत्व को अंत करने के प्रयास उल्लेखनीय तो थे ही, ये कार्य वर्तमान में भी पूरे के पूरे भारतीय समाज का मार्गदर्शन करने का कार्य करते हैं। सावित्रीबाई की विरासत अनंत काल तक हमारे जीवन को समृद्ध बनाती रहेगी। स्वतंत्रता पूर्व समाज–सुधारों का एजेंडा ज्योतिबाराव–सावित्रीबाई फुले के सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार से ही अभिप्रेरित रहा। इस प्रकार हम देखते हैं कि विमर्श, जोकि सामाजिक न्याय के विभिन्न ढांचों में परिलक्षित होता है, उसको आकार देने में सावित्रीबाई जैसी एक कार्यकत्री ने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया। ऐसे चरित्रों एवं विमर्शों को समकालीन ज्ञान एवं शक्ति की संरचना समझने में महत्व दिया ही जाना चाहिये। यदि इन विमर्शों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण समझकर भावी पीढ़ियों तक अंतरित किया जाता है, तो यह निश्चित ही समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन को दिशा देने का कार्य करेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1. आचार्य, हेमलता (2015), भारत की सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबाफुले, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–110
2. म्हात्रे, उज्जवला (2023) सावित्रीनामा (मूल मराठी से हिन्दी अनुवाद), फॉरवर्ड प्रेस, नई दिल्ली पृष्ठ 24–31
3. आगलावे, सरोज (2005) जोतीराव फुले का सामाजिक दर्शन, अनुवाद–मीना काम्बले, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 20–24
4. Chaudhary, Bhupen (2022) Savitribai Phule, Global Vision Publishing House, New Dehli, p.p.7-12.
5. कुमार, विजय (2010) ताकत के खेल में ज्ञान की भूमिकायें–मिशेल फूको, अंधेरे समय में विचार, संवाद प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ–135

"Dr. Deepti Johari, Professor, Department of Education, Bareilly College, Bareilly" is thankful to MJP Rohilkhand University, Bareilly for the financial support in the form of "Innovative Research Grant (IRG)" with File No. **IRG/MJPRU/DoR/2022/09.**

Cite this Article

प्रो. दीप्ति जौहरी, "भारतीय सामाजिक परिवर्तन में सावित्रीबाई फुले के अथक प्रयासों का विश्लेषण", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST),* ***ISSN:*** *2584-0231, Volume 2, Issue 6, pp. 37-41, June 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.65*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.